

HARIV. 310. BHARTṚ. 1, 84. 2, 51. VARĀH. BRH. S. 86, 115. PĀNĒAT. 246, 14. HIT. 110, 2. KATHĀS. 24, 199. BRAHMAVAIV. P. in Verz. d. Oxf. H. 22, a, 11. 12. f. धीवरी KATHĀS. 26, 149. Sollte der Fischer etwa nach seiner Geschicklichkeit (vgl. धीवन्) benannt worden sein? — 2) f. धीवरी a) eine Art von Harpune, = मत्स्यवेधिनी UḠGVAL. zu UṆĀDIS. 3, 1. — b) Fischbehälter, Fischkorb, = मत्स्याधानी (lies: मत्स्यधानी) UḠGVAL. zu UṆĀDIS. 4, 114. — 3) n. Eisen (vgl. तीव्र) H. c. 138. — Vgl. धीवन् धीवरक (von धीवर) m. Fischer ÇĀK. Ch. 110. fgg. धीशक्ति (2. धी + शक्) f. Erkenntnisvermögen AK. 3, 3, 25. धीसख (2. धी + सख = सखि) m. Rathgeber, Minister H. 719. धीसचिव (2. धी + सचि) m. dass. AK. 2, 8, 4. RĀGA-TAR. 2, 67. 4, 495. धोकरा (2. धी + कृ) f. eine süsse Gurkenart NIGH. Pr. 1. धु s. धू. 2. धु (= 1. धु) f. das Schütteln, Bewegen EKĀKSHARAK. im ÇKDr. धुक m. und धुका f. eine best. Pflanze, = vulg. भुपवार und रानवार (वार = वदर) NIGH. Pr.

धुन्, धुँन्ते anzünden; geplagt werden; leben DĀTUP. 16, 1. — सन् anzünden, anfachen, entflammen, beleben: मनश्चयुता मन र्-वोपपत्ता: संधुतधन् MBh. 13, 3677. संधुधुते (eher pass. als intrans.) तपो: कोप: BHATṬ. 14, 109. — caus. dass.: अग्निस्तोकांमिवात्मानं संधुतयति यो नरः (अग्निं स्तो०?) MBh. 1, 5628 (vgl. 3, 258). कृशान्संधुतयति 1, 2344 (vgl. 2475). निर्वाणभूयिष्ठमवाप्त्य वीर्यं संधुतयत्तौव वपुर्गुणैः KUMĀRAS. 3, 52. सत्त्वं समदुधुतच्च वारणाणाम् BHATṬ. 13, 34. Die folgenden pass.-Formen gehören wohl auch zum caus.: करेण भानोर्वज्रलावसाने संधुतय-माणेव शशाङ्कलेखा KUMĀRAS. 7, 8. तपोमहद्भिर्भवतां शरामि: संधुतयतां नो ऽरिसन्निधनेषु BHATṬ. 2, 28. श्रेणीज्जर्जरितं मनागापि मनो नाद्यापि संधु-दयते (so ist zu lesen) Gīt. 3, 12. संधुत्तितायि सुÇH. 2, 189, 5. 229, 14. DA-ÇAK. in BENF. Chr. 197, 10. आतपात्संधुत्तितमदा (परभृता) VIKR. 39, 2. संधु-त्तितं मण्डलचण्डवतिरमर्यतां दृष्टं नितितपालतेऽत्र BHATṬ. 12, 41. — Vgl. संधुत्तण.

धुँङ्गा f. ein best. Vogel VS. 24, 31.

धुनय् (denom. von धुनि) rauschen, rauschend fließen: तस्मा इद्विधे धुनयत् सिन्धवः RV. 2, 23, 5.

— आ rauschend herbeikommen: आ धेनेवो धुनयत्तामशिक्षी: सवर्द्धधा: RV. 3, 53, 16.

धुनि (von धन्) 1) adj. rauschend, brausend, tosend; von den Marut RV. 1, 64, 5. 87, 3. 5, 60, 7 u. s. w. द्यात्तश्च धुनिश्च VS. 39, 7. TAITT. Ān. 4, 24, 1. अर्द्धिर्धुनिर्वातं इव धन्वीमान् RV. 1, 79, 1. त्वं धुनिरेन्द्र धुनिम-तीक्ष्णोरपः सौरा न स्रवती: 173, 9. 5, 34, 5. 8. VS. 7, 12. स ई मर्हो धुनि-मेतैररम्णात् RV. 2, 15, 5. दिवे दिवे धुनयो वृत्तयर्म (Flüsse; vgl. NIGH. 1, 18). 2, 30, 2. त्वामग्ने कृतिं वावशाना गिरैः सचत्ते धुनयो घृताची: 7, 3, 5. धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्टो: 56, 8. युजानि अश्वा वातस्य धुनी 10, 22, 4. अश्वमिवाधुनदुनिमत्तिरितम् 149, 1. उत्रा न मायुं चितयत् धुनयः 98, 3. vom Soma 89, 5. — 2) m. N. pr. eines von Indra bekämpften Dämons: स्वप्नेनायुष्यं चुमुरिं धुनिं च RV. 2, 15, 9. 6, 18, 8. 20, 13. 7, 19, 4. 10, 113, 9. — 3) f. Fluss (vgl. नदी) NIGH. 1, 13. BHAR. zu AK. 1, 2, 3, 29. ÇKDr. Vgl. धु०. Gewöhnlich धुनी AK. 1, 2, 3, 29. H. 1080. RĀGA-TAR. 1, 163. स्वर्धुनी Bālg. P. 8, 21, 4. कर्पा० 4, 29, 55.

III. Theil.

धुनिमत् (von धुनि) adj. rauschend: ऋपः RV. 1, 175, 9.

धुनिव्रत (धुनि + व्रत) adj. der zu tosen p/legt, von der Schaar der Marut RV. 5, 58, 2. 87, 1.

धुनी s. u. धुनि.

धुनीनाथ (धुनी + नाथ) m. der Schutzherr der Flüsse, das Meer RĀGAN. im ÇKDr.

धुनेति (धुन = धुनि + इति) adj. rauschenden Gang habend: धुनेतयः सुप्रकृतं मदतो वरुष्यते अग्नि ये नस्तत्त्रे RV. 4, 30, 2.

धुन्धु m. N. pr. eines Asura, den Kuvalāçva (Kuvalajāçva) töd- tete, MBh. 3, 13511. 13532. 13582. fgg. HARIV. 672. fgg. VP. 361. fg. Bālg. P. 9, 6, 22. fg. Vater des Sunda R. GORR. 1, 28, 7. धुन्धुना चैव — पुरा मांसं न भक्षितम् MBh. 13, 5668. fg. — v. l. für Kūṅku (Nachkomme Triçāṅku's) VP. 373, N. 12.

धुन्धुमार (धुन्धु + मार) m. 1) der Mörder Dhundhu's, Bein. Kuva- lāçva's (Kuvalajāçva's) H. 701. an. 4, 260. MBh. 3, 13486. fgg. 13595. 13615. 13, 333. HARIV. 690. VP. 361. Bālg. P. 9, 6, 23. — ein Sohn Tri- çāṅku's und Vater Juvaṇāçva's R. 1, 70, 24 (GORR. 72, 21. fg.). 2, 110. 12. fg. DAÇ. 2, 41. — धुन्धुमारख HARIV. 672. fg. — 2) = गृकालिक (sic) Hār. 245. Hauseidechse (गृकालिका) WILS. mit einem Fragezeichen. — 3) = पादालिक H. an. = पदालिक (?) MED. r. 272. — 4) Coccinelle (इन्द्रगोप, शक्रगोप) H. an. MED. Hār. — 5) = गृधूम eine best. Pflanze diess. Rauch eines Hauses WILS.

धुर (viell. von धृ) P. 3, 2, 177. VOP. 26, 76. f. (m. MBh. 13, 2876: dagegen ist 4, 1414 wohl वामो zu lesen) 1) derjenige Theil des Joches, welcher auf die Schulter des Zugthiers gelegt wird; uneig. und übertr. die einem aufgebürdete Last (= भार H. an. 1, 12. = चित्ता EKĀKSHARAK. im ÇKDr.). RV. 1, 84, 16. 134, 3. 151, 4. कुरी धुरि धिष्वा रथस्य 2, 18, 7. वर्षापवत् विव्रती धूर्षु रथम् 1, 100, 16. 3, 33, 2. 5, 535, 6. 7, 34, 4. 63, 2. 10, 94, 6. धुरा न युक्तः 1, 164, 19. उपोऽस्याद्वातो धुरि रासभस्य 162, 21. युक्ता मातासीङ्गुरि दक्षिणायाः (P. 7, 1, 39. VĀRT. 1, Sch.) 164, 9. एवेद्वर्षु उ- त्तरा 8, 33, 18. 10, 28, 6. नानुयान्सकृते धुरम् AV. 5, 17, 18. वरुति वै व- क्रिर्धुरो यासु युष्येत AIT. Br. 6, 18. अथयुधु धुरं युञ्जति ÇAT. Br. 1, 4, 4, 13. 1, 2, 10. KĀTJ. ÇR. 18, 6, 1. 3, 6, 19. धूर्णीत ÇAT. Br. 5, 1, 4, 4. KĀTJ. ÇR. 14, 3, 2. धूरभिमर्शन 2, 3, 13. 29. — MBh. 1, 2344 = 2475. धुरमुदकृते ऽधि- काम् MBh. 3, 334. 6, 1896. 13, 3695. R. 2, 73, 14. MĀLAV. 89. अत्रस्तुभि- र्युक्तधुरं तुरंगैः । रथम् RAGH. 14, 47. धुर्याणां च धुरो मोक्षम् 17, 19. न गर्द- भा वाजिधुरं वरुति MĀKṢH. 63, 10. VIKR. 85, 8. गौरिव नित्यं गुरुणा धूर्षु नियोज्यमानः MBh. 1, 741. धुरि चानुपश्यमानः — पतितं त्यजति भृत्यः PĀNĀT. ed. ORN. I, 66. द्वितीयं नानुपश्यामि धुरं यस्ते समुदकृत् HARIV. 3981. R. 2, 36, 14. धूरुनेन धार्या स्यात् MBh. 3, 2799. वीर्यमाश्वाय कौरव्य धुरमुदकं धुर्यवत् 3, 1320. स त्वं कुलधुरं गुर्वी धुर्यवदोदमर्ह- सि R. GORR. 2, 117, 15. नावसीदितुमर्हति उदकृतः सतो धुरम् MBh. 4, 919. 13, 7170. राजयोणां पुराणानां धुरं धत्ते उरुदहाम् 8, 3147. उद्यम्य धुरम् 4490. धुरो वोढारम् 7, 373. स भवान्धुर्यवत्संख्ये धुरमुदोदमर्हति 8, 375. त्वयेयमुद्यते वीर रणधूर्तो गरीयसो R. 6, 82, 43. वरु वैतामर्हो धुरम् MBh. 1, 4166. 13, 7169. 14, 25. R. 1, 71, 15. स्वभुजादवतारिता तेन धूर्गग- तो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे RAGH. 1, 34. 5, 66. भूयः स भूमेधुरमाससज्ज (भुजे) 2, 74. 3, 35. KUMĀRAS. 6, 30. वक्ष्ये कार्यधुरं तव MBh. 8, 1663. लोकस्य

61\*